22 जुलाई, 2018 को इंदौर के नेहरू स्टेडियम में 158वां आयकर दिवस समारोह में– 'टैक्साथन–वॉक' के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय अध्यक्ष का भाषण।

- आयकर विभाग द्वारा 158वें आयकर दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्र के विकास हेतु आयोजित 'टैक्साथन–वॉक' का शुभारंभ करने और हमारे राष्ट्र के विकास में इंदौरवासियों के बहुमूल्य योगदान के लिए, उनका अभिनंदन करने हेतु आज आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है।

- इन्दौर शहर ने अपनी लोकमाता देवी अहिल्याबाई की 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की विरासत को संभाला है, वह निश्चय ही यहां की जागरूक व न्यायप्रिय जनता एवं उनके कर्त्तव्यनिष्ठ व्यवहार का परिणाम है। यह इन्दौरवासियों की ही जागरूकता है कि हमें लगातार दूसरी बार स्वच्छता सर्वे में प्रथम स्थान मिला है। यहां तक कि देश में वर्ष 2017–18 में tax growth rate भी इसी शहर में सबसे ज्यादा रहा। आयकर से संबंधित इस कार्यक्रम में लोगों की इतनी अधिक संख्या में भागीदारी देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। इससे पता चलता है कि हमारे लोग समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी समझने में कितने सजग हैं।

- 'आयकर संग्रहण अभियान' को सफल बनाने के लिए मैं इंदौर क्षेत्र के मुख्य आयकर आयुक्त, श्री अजय कुमार चौहान और उनके अधिकारियों को धन्यवाद देती हूँ जिसके फलस्वरूप वित्तीय वर्ष 2017–18 के लिए देश में

सर्वाधिक कर वृद्धि दर प्राप्त करके इंदौर को एक बार फिर गौरवान्वित किया गया है।

- Tax देना, विकास के यज्ञ में अपनी आहुति देना है। सौभाग्यशाली लोग टैक्स देने वालों की श्रेणी में आ पाते हैं, इसलिए इससे मनाही करना या टैक्स देने में संकोच करना सही नहीं है। Income Tax Department की इस पूरी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत में हमेशा से टैक्स देने की परम्परा रही है। Indian Tax System is based on the theory of maximum social welfare. मनुस्मृति के सातवें अध्याय में कराधान से संबंधित महत्वपूर्ण बातें लिखी गईं हैं। **उनमें एक श्लोक में यह लिखा गया है कि खरीद और बिक्री, मार्ग की दूरी आदि, भोजन व भरण–पोषण का व्यय और लाभ, वस्तु की प्राप्ति एवं जनकल्याण, इन सब बातों पर विचार करके राजा को व्यापारी से tax लेना चाहिए।**

- मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आयकर विभाग का दृष्टिकोण प्रगतिशील कर नीति, सक्षम और प्रभावी कर प्रशासन तथा संशोधित स्वैच्छिक अनुपालन के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भागीदार बनाना है।

- हमें यह बात स्वीकार करने के साथ–साथ समझनी भी होगी कि हम जो tax का भुगतान करते हैं और सरकार revenue एकत्रित करके जो विकासात्मक कार्य करती है, इन दोनों के बीच निकट का संबंध है।

- एक स्वैच्छिक tax compliant society के निर्माण के लिए नागरिकों, कॉरपोरेट और व्यावसायिक क्षेत्र तथा सरकार के बीच विश्वास और सहयोग के वातावरण की जरूरत होती है।

- जब करदाताओं को कर नियमों का अनुपालन करना सुगम प्रतीत होता है तो स्वैच्छिक अनुपालन में वृद्धि होती है। इसलिये, आयकर विभाग को स्वैच्छिक अनुपालन की बाधाओं की पहचान करनी चाहिये और उन्हें हटाने के लिए आवश्यक उपाय करने चाहिये तथा अच्छी एवं सुदृढ़ सार्वजनिक सेवा प्रदान करने वाली प्रणाली स्थापित करनी चाहिये। विभाग को सभी श्रेणियों के करदाताओं की आवश्यकताओं को समझना चाहिये। करदाताओं के साथ मौखिक या लिखित रूप में ऐसे शब्दों का प्रयोग करने से बचने का प्रयास किया जाना चाहिये जो मनमानापन, सत्तावादी रवैया अथवा अहंकार दर्शाते हों।

- मुझे खुशी है कि अपने विज्ञापन अभियानों के माध्यम से विभाग करदाताओं तक पहुँचने का प्रयास कर रहा है। श्रव्य और दृश्य विज्ञापन सामग्री वास्तव में बहुत अच्छी है।

- स्वैच्छिक कर अनुपालन समाज हेतु कुशल और पारदर्शी कर प्रशासन एक पूर्वापेक्षा भी है। कराधान में निश्चितता, सुविधा और सरलता, tax dispute का त्वरित समाधान और प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग निस्संदेह हमें एक बेहतर tax compliant society की दिशा में आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान करेगा। मेरा मानना है कि लोगों के अच्छे वित्तीय व्यवहार को पुरस्कृत और प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है।

- विगत वर्षों में और प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ हमने ई–सेवाएं उपलब्ध कराने और कर प्रणाली में अधिकाधिक पारदर्शिता लाने में भी बहुत प्रगति की है। बेहतर पारदर्शिता, जवाबदेही, ईमानदारी और जानकारी साझा कर हम करदाताओं के अनुकूल व्यवस्था बनाने और हमारे देश में कर का भुगतान करने वाली संस्कृति का भी निर्माण करने में और अधिक सहायता कर सकते हैं।

- ''टैक्साथॉन वॉक'' के सफल आयोजन के लिए मैं आयोजकों को शुभकामनाएं देती हूं। अपनी बात समाप्त करने से पूर्व, मैं एक बार फिर इंदौर के लोगों को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। ईमानदारी सबसे महत्वपूर्ण है। आज इस दौर में इस तरीके से दौड़ेंगे, योग करेंगे तो अपने शरीर के प्रति ईमानदार रहेंगे। पढ़ाई में ईमानदार रहेंगे तो आपका कैरियर अच्छा बनेगा, संस्कारों में ईमानदारी होगी तो आपका एवं आपके परिवार का सर्वांगीण विकास होगा। ईमानदारी से व्यवसाय करेंगे तो आपकी साख बढ़ेगी और ईमानदारी से टैक्स चुकाएंगे तो देश आगे बढ़ेगा, भारत का प्रत्येक नागरिक आगे बढ़ेगा। तो दौड़ने से शुरूआत करते हैं, ईमानदारी से टैक्स चुकाने तक। इस पूरे सफर में मुझे नया भारत दिखता है।
- मैं आप सबका आह्वान करती हूं:–"Run for self Health, Pay tax for Nation's Health."

धन्यवाद।

————